भविष्यवक्ता यिर्मयाह ने अपने जन्म के दिन को क्यों शाप दिया – और क्या हमें अपने जन्मदिन को शाप देना चाहिए?

उत्तर:

आइए हम शास्त्र को देखें, विशेष रूप से यिर्मयाह 20:14–17:

> यिर्मयाह *20:14–17 (ERV-Hindi)*
> *14* “शापित हो वह दिन जिस दिन मैं जन्मा*!* जिस दिन मेरी माता ने मुझे जन्म दिया, वह धन्य न हो।
> *15* शापित हो वह पुरुष जिसने मेरे पिता को समाचार दिया, ‘तुम्हारे यहाँ पुत्र हुआ है,’ और उसे बहुत प्रसन्न किया।
> *16* वह पुरुष उन नगरों के समान हो, जिन्हें प्रभु ने बिना दया के नष्ट कर दिया; वह सुबह के समय चीत्कार सुने और दोपहर में भय।
> *17* क्योंकि उसने मुझे गर्भ में नहीं मारा, नहीं तो मेरी माता मेरा कब्र बन जाती और उसकी कोख हमेशा महान होती।”

यहाँ हम देखते हैं कि यिर्मयाह उस अत्यधिक दुःख और उत्पीड़न से अभिभूत था, जो उसने प्रभु का संदेश फैलाने के कारण झेला। उसे पीटा गया, कैद किया गया, उपहास उड़ाया गया और उसका पीछा किया गया।

इन्हें भी देखें:

- यिर्मयाह 20:1–2 – पाशखुर उसे पीटता और कैद करता है।
- यिर्मयाह 37:15–16 – उसे फिर से पीटा और कैद किया जाता है।

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

भविष्यवक्ता यिर्मयाह ने अपने जन्म के दिन को क्यों शाप दिया – और क्या हमें अपने जन्मदिन को शाप देना चाहिए?

- यिर्मयाह 38:6 – उसे कुएँ में फेंक दिया जाता है।
- यिर्मयाह 15:5 – वह अस्वीकार और परित्याग का शोक व्यक्त करता है।

यिर्मयाह 20:18 में अपने दुख का सार व्यक्त करता है:

> “मैं क्यों गर्भ से बाहर आया, कि श्रम और दुख देखूं, और अपने दिन अपमान में व्यतीत करूँ?” (यिर्मयाह *20:18)*

इसलिए उसने अपने जन्म के दिन को शाप देने की भावना अपने गहरे भावनात्मक दुःख, आध्यात्मिक थकान और मानवीय कमजोरी से व्यक्त की।

यिर्मयाह अकेला नहीं था

भविष्यवक्ता आयोब ने भी अपने जन्म के दिन को इसी प्रकार के निराशा में शाप दिया:

> आयोब *3:1–6 (ERV-Hindi)*
> *1* “इस सब के बाद आयोब ने अपना मुख खोला और अपने जन्म के दिन को शाप दिया।

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

3 [illegible]
4 [illegible]
5 [illegible]
6 [illegible]

[illegible]

भविष्यवक्ता यिर्मयाह ने अपने जन्म के दिन को क्यों शाप दिया – और क्या हमें अपने जन्मदिन को शाप देना चाहिए ?

> आयोब *42:3–6 (ERV-Hindi)*
> *3* “यह कौन है जो ज्ञान के बिना परामर्श छुपाता है ?” इसलिए
> मैंने वह कहा जो मैं समझ नहीं पाया , मेरे लिए अद्भुत बातें
> जो मैं नहीं जानता था।
> *5* “मैंने केवल कानों से तेरा नाम सुना , पर अब मेरी आंखें
> तुझे देख रही हैं ;
> *6* इसलिए मैं अपने आप को घृणा करता हूँ और राख और धूल में
> पश्चाताप करता हूँ। ”

यिर्मयाह ने भी बाद में अपने संदेह और निराशा को मान्यता दी और परमेश्वर द्वारा सुधारित हुआ :

यिर्मयाह 15:18–19 (ERV-Hindi)
18 “मेरा दुःख अनंत क्यों है और मेरी चोट इतनी भयंकर और
अचिकित्स्य क्यों है ? तू मेरे लिए धोखेबाज जलधारा की तरह है ,
जैसे एक स्रोत जो सूख गया हो। ”
19 “इसलिए यह प्रभु का वचन है : ‘यदि तू पश्चाताप करेगा , तो मैं
तुझे फिर से स्थापित करूंगा ताकि तू मेरी सेवा कर सके …’”

हम क्या सीख सकते हैं ?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

भविष्यवक्ता यिर्मयाह ने अपने जन्म के दिन को क्यों शाप दिया – और क्या हमें अपने जन्मदिन को शाप देना चाहिए ?

आयोब और यिर्मयाह दोनों ही परमेश्वर के भक्त थे, फिर भी उन्होंने असंभव दुःख झेला। उनका दुःख उन्हें ऐसा बोलने के लिए मजबूर करता है, जिसे वे बाद में पछताते हैं। यह हमें भी दिखाता है कि हम ईमानदारी से अपने भावनाओं को परमेश्वर के सामने ला सकते हैं।

हमें अपने जीवन, जन्मदिन या माता-पिता को शाप नहीं देना चाहिए। यह निराशा की प्रतिक्रिया है, विश्वास की नहीं। यहां तक कि यीशु ने भी चेतावनी दी कि दुःख उनके अनुयायियों के मार्ग का हिस्सा है :

> मत्ती *10:16–18 (ERV-Hindi)*
> *16* “देखो, मैं तुम्हें भेड़ की तरह भेड़ियों के बीच भेजता हूँ; इसलिए सांप की तरह चतुर और कबूतर की तरह निर्दोष बनो।
> *17* पर मनुष्यों से सतर्क रहो; वे तुम्हें न्यायालयों में सौंपेंगे और अपनी सभाओं में पीटेंगे।
> *18* और मेरे कारण तुम राज्यपालों और राजा के सामने गवाह बनकर लाए जाओगे, उनके और जातियों के लिए।”

दुःख परमेश्वर के परित्याग का संकेत नहीं है, बल्कि यह अक्सर शुद्धि की प्रक्रिया का हिस्सा होता है। याकूब 1:2–4 हमें याद दिलाता है कि परीक्षाएँ हमारे विश्वास और चरित्र को मजबूत करती

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

भविष्यवक्ता यिर्मयाह ने अपने जन्म के दिन को क्यों शाप
दिया – और क्या हमें अपने जन्मदिन को शाप देना चाहिए ?

हैं :

> याकूब *1:2–4 (ERV-Hindi)*
> *2* “भाइयों , जब तुम विभिन्न परीक्षाओं में पड़ो तो उसे पूरी
> प्रसन्नता समझो ,
> *3* क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हारे विश्वास की परीक्षा
> धैर्य उत्पन्न करती है।
> *4* परंतु धैर्य को अपना पूर्ण प्रभाव होने दो , ताकि तुम पूर्ण
> और बिना दोष के बनो , और किसी चीज़ में कमी न हो। ”

निष्कर्ष

अपने जन्मदिन या जीवन को शाप देना सही नहीं है , चाहे दुःख कितना भी बड़ा क्यों न हो।

इसके बजाय हमें :

- अपने दुःख को ईमानदारी से परमेश्वर के सामने रखना चाहिए।
- उसकी महान योजना पर भरोसा करना चाहिए , भले हम न समझें।
- शक्ति के लिए प्रार्थना करनी चाहिए कि हम विश्वास में बने रहें।
- शिकायत और शाप से बचना चाहिए (फिलिप्पियों 2:14–15)।

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 6

भविष्यवक्ता यिर्मयाह ने अपने जन्म के दिन को क्यों शाप दिया – और क्या हमें अपने जन्मदिन को शाप देना चाहिए ?

> फिलिप्पियों *2:14–15 (ERV-Hindi)*
> *14* “सब कुछ बिना बड़बड़ाहट और झगड़े के करो,
> *15* ताकि तुम निर्दोष और निर्मल बनो, एक विकृत और भ्रष्ट पीढ़ी में परमेश्वर के बच्चों के रूप में, और उनके बीच तुम आकाश के तारों की तरह चमको।”

आइए हम आयोब और यिर्मयाह से सीखें – उनकी कमजोरियों से ही नहीं, बल्कि उनके पुनर्स्थापन और पश्चाताप से भी। उनका जीवन हमें सिखाता है कि दुःख का मतलब परित्याग नहीं है, और विश्वास अक्सर परीक्षाओं की आग में ढाला जाता है।

प्रभु हमें कठिन समय में भी विश्वास में अडिग रहने की शक्ति दें। आमीन।

Share on:
WhatsApp

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 7